जलवायु आपातकाल का सामना

लेखक- सुजाता बिरवान (वैज्ञानिक)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-III (पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी) से संबंधित है।

द हिन्दू

15 मई, 2019

"जलवायु संकट की राजनीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन करने की जरूरत है, जिसमें लोगों के द्वारा किया जा रहा आंदोलन आशा की एक किरण है।"

संयुक्त राज्य अमेरिका की नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज की कार्यवाही द्वारा जारी किये गये एक पेपर से पता चलता है कि पिछली आधी शताब्दी के दौरान ग्लोबल वार्मिंग के कारण देशों की आय में कई बदलाव आये हैं। पहले से धनी देश और अमीर हो गए हैं और विकासशील देश इस समय के सापेक्ष में और अधिक गरीब बन गये हैं। 1961 और 2010 के बीच भारत की जीडीपी विकास दर 31% कम हुई है, जबकि नॉर्वे ने प्रति व्यक्ति के आधार पर लगभग 34% बढ़त प्राप्त की है।

अभी हाल ही में जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर अंतर-सरकारी विज्ञान-नीति प्लेटफॉर्म ने बताया है कि दुनिया भर में प्रजातियों की संख्या कम से कम एक के पाँचवें हिस्से तक कम हो गई है, अगले कुछ दशकों में लगभग एक लाख प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर हैं और 85% आर्द्रभूमि हम खो चुके हैं।

लेकिन इन आश्चर्यजनक वैज्ञानिक निष्कर्षों में से कोई भी सुर्खियों में अपनी जगह सुनिश्चित नहीं कर पाया। प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् ने भी जलवायु परिवर्तन या भारत में जैव विविधता के नुकसान के कारण आर्थिक उत्पादन के नुकसान पर चर्चा करने के लिए एक आपातकालीन बैठक आयोजित करने की नहीं सोची। भारत में आम चुनाव लड़ने वाले राजनीतिक दलों के घोषणापत्रों में भी जलवायु और पर्यावरण से संबंधित प्रश्नों पर ध्यान नहीं दिया गया।

मिलीभगत की घटनाएं

हमारे पास कुलीन वर्ग के नेटवर्क के कई उदाहरण हैं, जो स्थिति का लाभ उठाते हुए अपने नियंत्रण को मजबूत करते हैं। इन नेटवर्कों में अक्सर सरकारें सक्रिय रूप से या चतुराई से जीवाश्म ईंधन कंपनियों, कृषि-औद्योगिक अभिजात वर्ग, वित्तीय कुलीनों और अन्य बड़े व्यवसायियों के साथ होती हैं, जो जलवायु परिवर्तन की अनदेखी कर रहे हैं और बढ़ती आपदाओं से भी धन लेते हैं। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने हाल ही में अनुमान लगाया है कि जीवाश्म ईंधन सब्सिडी 2015 में 4.7 ट्रिलियन डॉलर थी और 2017 में 5.2 ट्रिलियन डॉलर होने का अनुमान है।

आर्कटिक तेजी से पिघल रहा है और आर्कटिक देशों के बीच हालिया चर्चाओं के अनुसार तेजी से पिघलते ग्लेशियर के कारण शिपिंग के लिए नए मार्ग प्रशस्त होंगे, जिससे महाशक्तियां तेल, गैस, यूरेनियम और कीमती धातुओं का व्यवसाय करके धन कमा सकती हैं।

हाल ही में मोजाम्बिक में दो तीव्र चक्रवातों, इदई और केनेथ को व्यापक तबाही का कारण बनते देखा जा सकता है। द नेशन के एक लेख में, दीप्ति भटनागर, एक स्थानीय कार्यकर्त्ता, बताती हैं कि कैसे बड़ी तेल और ऊर्जा कंपनियां मोजाम्बिक की तरल प्राकृतिक गैस का उपयोग करने के लिए उत्सुक हैं, जिसमें कई देशों के बड़े-बड़े बैंक वित्तपोषण में शामिल हैं। 2013 में, मोजाम्बिक सरकार द्वारा 2 बिलियन डॉलर के बैंक ऋण की गारंटी दी गई थी।

जब सरकार अपने ऋणों को चुका नहीं पायी और मुद्रा लुढ़क गई, तो कई सवाल उठने लगे। मोजाम्बिक में हमें यह देखने को मिल सकता है कि कैसे 'भ्रष्ट स्थानीय कुलीन, विदेशी कुलीन के साथ मिलकर लूटपाट करते हैं' एवं खुद को और अपने सहयोगियों को समृद्ध करते हैं तथा आम लोगों को कर्ज का बोझ सहन करने के लिए छोड़ दिया जाता है।

हालांकि, इस तरह का भ्रष्टाचार नया नहीं है और इसलिए इसके विभिन्न संस्करण दूसरे देशों में भी देखे जा सकते हैं। एक और

हालिया उदाहरण भारतीय वन अधिनियम, 2019 का मसौदा है, जो वन विभाग की राजनीतिक और पुलिस शक्ति को बढ़ाता है और लाखों वनवासियों के अधिकारों पर रोक लगाता है।

ध्यान देने योग्य तथ्य

नीतियां और प्रतिबद्धताएं स्पष्ट करती हैं कि अधिकांश सरकारें और व्यवसाय जलवायु एवं पारिस्थितिक संकटों से निपटने में रुचि नहीं दिखाते हैं। वे निश्चित रूप से इन मुद्दों पर ध्यान नहीं देंगे, जिस पर वास्तव में ध्यान देने की आवश्यकता है। इन सबके बावजूद, हमारा सौभाग्य है कुछ लोग 'प्लेनेट इमरजेंसी', जलवायु और पारिस्थितिकी के लिए एक बड़े पैमाने पर आंदोलन कर रहे हैं। ग्रेटा थुनबर्ग स्कूल जाने वाले बच्चों के बीच इसका नेतृत्व कर रही हैं और यूरोप के कई हिस्सों एवं अब एशिया में भी 'डाई-इन्स' (die-ins) नाम के विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया जा रहा है। उनकी अहिंसक सविनय अवज्ञा सिर्फ वही है जिसकी आवश्यकता है और यह वास्तव में बच्चों तथा इनके दादा-दादी द्वारा एक साथ विरोध करते देखना प्रेरणादायक है। लोगों का आंदोलनों, चाहे वे छात्रों या वयस्कों द्वारा किया जा रहे हैं, को लंबे समय तक नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है और सरकारों को इस पर ध्यान देने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

पूर्व-औद्योगिक समय में 280 पीपीएम की तुलना में अब वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड के 415 पार्ट्स प्रति मिलियन (पीपीएम) से अधिक भागों की सांद्रता है। लेकिन, जीवाश्म ईंधन कंपनियों और राजनेताओं ने कम से कम 30 वर्षों के लिए जलवायु परिवर्तन के बारे में जाना है। वे सीधे तौर पर जलवायु के बारे में गलत सूचना देते हैं, तंबाकू कंपनियों से सबक लेते हुए, जो दशकों से सिगरेट के सुरक्षित होने के बारे में झूठ का प्रचार करती आ रही हैं। डॉक्यूमेंट्री फिल्म मर्चेंट्स ऑफ डाउट बताती है कि कैसे मुट्ठी भर वैज्ञानिकों ने ग्लोबल वार्मिंग पर सच्चाई को अस्पष्ट कर दिया है, ताकि व्यावसायिक लाभ का प्रवाह बना रहे। जीवाश्म ईंधन उद्योग ने राजनेताओं को भी वित्त पोषित किया है, इसलिए उनके शब्द और कानून पहले ही खरीदे जा चुके हैं।

एक प्रमुख परिवर्तन

एकमात्र समाधान जो सरकार और व्यवसाय देख रहे हैं, वह यह है, कि वे सब कुछ पहले की तरह ही चलना देना चाहते हैं। लेकिन हमारी पृथ्वी अब उस बिंदु से आगे निकल गयी है जहाँ छोटे-छोटे सुधारों से ही हम शून्य कार्बन तक पहुँच सकते थे। अब हम एक ऐसी अवस्था में हैं, जहाँ हमें अपनी जीवनशैली और उपभोग के तौर-तरीकों में बड़े बदलाव करने की जरूरत है। हाल ही में ब्रिटेन की संसद ने पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन को लेकर आपातकाल घोषित कर दिया है। ब्रिटेन ऐसा करने वाला दुनिया का पहला देश बन गया है। लेकिन हमें यह देखना होगा कि इस घोषणा के बाद क्या उचित कार्रवाई होगी।

GS World टीम...

जलवायु आपातकाल

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में ब्रिटेन की संसद ने पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन को लेकर आपातकाल घोषित कर दिया है। ब्रिटेन ऐसा करने वाला दुनिया का पहला देश बन गया है।
- इस प्रस्ताव को विपक्ष की तरफ से पेश किया गया था।
- जलवायु परिवर्तन पर आपात स्थिति घोषित करने की मांग कर रहे एक समूह के कार्यकर्त्ताओं ने मध्य लंदन में विरोध प्रदर्शन शुरू किया था।
- प्रदर्शनकारियों ने 11 दिन तक चले इस विरोध प्रदर्शन में शहर की सड़कों को बंद कर दिया। अब यह आंदोलन जर्मनी और अन्य यूरोपीय देशों में भी फैल गया है।
- इसके अलावा, आयरलैंड की संसद ने भी 09 मई, 2019 को जलवायु आपातकाल घोषित कर दिया है। आयरिश संसद ने एक संसदीय रिपोर्ट में संशोधन की घोषणा की। इस तरह आयरलैंड ऐसा कदम उठाने वाला दूसरा देश बन गया है।

क्या है?

- जलवायु आपातकाल की कोई सटीक परिभाषा नहीं है। लेकिन इस कदम को जलवायु और पर्यावरण पर महत्वपूर्ण उपायों के साथ जोड़ा गया है।
- ब्रिटेन सरकार ने कानूनी तौर पर यह निर्णय लिया है कि साल 2050 तक वो 80 प्रतिशत तक कार्बन उत्सर्जन को कम कर देगा।
- ब्रिटेन की संसद द्वारा जलवायु आपात स्थिति घोषित करने से पहले ही ब्रिटेन के दर्जनों कस्बों और शहरों ने जलवायु आपात स्थिति घोषित कर दी थी।
- ये साल 2030 तक कार्बन न्यूट्रल होना चाहते हैं अर्थात् उतना ही कार्बन उत्सर्जित हो, जिसे प्राकृतिक रूप से समायोजित किया जा सके।

जलवायु परिवर्तन क्या है?

- औद्योगिक क्रांति के बाद से पृथ्वी का औसत तापमान साल दर साल बढ़ रहा है। जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आइपीसीसी) की रिपोर्ट ने पहली बार इससे आगाह

किया था। जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणाम सामने आने लगे हैं।

- गर्मियां लंबी होती जा रही हैं और सर्दियां छोटी। प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति और प्रवृत्ति बढ़ चुकी है। ऐसा ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन की वजह से हो रहा है।
- जलवायु परिवर्तन के खतरों के बारे में वैज्ञानिक लगातार आगाह करते आ रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में, मानवजनित गतिविधियां जलवायु को प्रभावित कर रही हैं।
- जलवायु परिवर्तन के साक्ष्य कई प्रकार के स्रोतों से उपलब्ध होते हैं जिन्हें पुराकालीन जलवायवीय दशाओं के विवेचन के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है।

आवश्यकता क्यों?

- संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि जलवायु परिवर्तन से होने वाली तबाही से बचने के लिए हमारे पास सिर्फ बारह साल रह गए हैं।
- यदि इस समस्या का समाधान जल्दी नहीं किया गया, तो धरती पर तबाही आ जाएगी।

जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आइपीसीसी) क्या है?

- आईपीसीसी जलवायु परिवर्तन के आंकलन के लिए बनाई गई एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था है।
- इसकी स्थापना संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम तथा विश्व मौसम विज्ञान संगठन द्वारा साल 1988 में की गई थी। इसका मुख्यालय स्विट्जरलैंड के जिनेवा में स्थित है।
- वर्तमान में विश्व के 195 देश इसके सदस्य हैं। इसमें विश्व के विभिन्न देशों के वैज्ञानिकों का समूह कार्य करता है, वे जलवायु परिवर्तन का नियमित आंकलन करते हैं।
- प्रत्येक 5-6 वर्ष उपरांत आईपीसीसी जलवायु परिवर्तन पर एक व्यापक रिपोर्ट प्रस्तुत करती है।

ग्रीनहाउस प्रभाव क्या है?

- ग्रीनहाउस प्रभाव एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा किसी ग्रह या उपग्रह के वातावरण में उपस्थित कुछ गैसें वातावरण के तापमान को अपेक्षाकृत अधिक बनाने में सहयता करती हैं।
- इन ग्रीनहाउस गैसों में कार्बन डाई ऑक्साइड, जल-वाष्प, मिथेन आदि गैसें शामिल हैं। यदि ग्रीनहाउस प्रभाव नहीं होता, तो शायद ही धरती पर जीवन होता।
- अगर ग्रीनहाउस प्रभाव नहीं होता, तो पृथ्वी का औसत तापमान -18 सेल्सियस होता, न कि वर्तमान 15 सेल्सियस होता।
- धरती के वातावरण के तापमान को प्रभावित करने वाले बहुत से कारक हैं, जिसमें से ग्रीनहाउस प्रभाव एक कारक है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. पौलेंड के कैटोवाइस शहर में यूनाइटेड नेशंस फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज COP- 24 शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया।
2. ब्रिटेन जलवायु परिवर्तन को आपातकाल घोषित करने वाला विश्व का पहला देश बन गया है।
3. जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC) का मुख्यालय स्विट्जरलैण्ड के जिनेवा में स्थित है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2
(b) केवल 2
(c) 2 और 3
(d) 1, 2, और 3

1. Consider the following statements-

1. United Nations Framework Convention on Climate Change Conference of Parties - COP-24 summit was organised in Katowice, Poland.
2. Britain became the first nation to declare climate change as an emergency.
3. Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC) is headquartered at Geneva, Switzerland.

Which of the above statements is/are correct?

(a) 1 and 2
(b) Only 2
(c) 2 and 3
(d) 1, 2 and 3

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्नः- 'जलवायु परिवर्तन ने एक तरफ जहाँ जैव-विविधता को नुकसान पहुँचाया है, वहीं दूसरी तरफ भारत जैसे विकासशील देशों के आर्थिक विकास को भी अवरूद्ध किया है।' विवेचना कीजिए। (250 शब्द)

Q. 'Where on one side climate change has harmed biodiversity on the other hand it has also hindered economic development in developing countries like-India.' Analyse. (250 Words)

नोट : 14 मई को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(b) होगा।